महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

नाट्यकला एवं फ़िल्म अध्ययन विभाग में बिदेसिया लोकनाट्य कार्यशाला

लोक-समाज को समझने और सीखने की जरुरत -प्रो. सुरेश शर्मा

वर्धा दि. 7 जनवरी 2015: आज के समय में लोक-समाज को समझने और उनसे सीखने की अत्यंत आवश्यकता है। भारत में लोक नाट्य की परंपरा काफी पुरानी है। उन नाटकों के माध्यम से हम आज लोक नाटकों को और बेहतर बना सकते हैं। उक्त बाते नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग के अध्यख प्रो. सुरेश शर्मा ने रखी। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के नाट्यकला एवं फ़िल्म अध्ययन विभाग में बिदेसिया लोक नाट्य कार्यशाला के उदघाटन पर बोल रहे थे। यह आयोजन 22-29 दिसंबर को किया गया था।

कार्यशाला का संचालन "भिखारी ठाकुर रंगमंडल" के कलाकार प्रभुनाथ ठाकुर एवं जैनेन्द्र कुमार दोस्त ने किया। प्रभुनाथ ठाकुर जहां महान लोक-कलाकार भिखारी ठाकुर के परिवार के सदस्य (भतीजे) हैं वही जैनेन्द्र कुमार दोस्त नाट्यकला एवं फ़िल्म अध्ययन विभाग के पूर्व छात्र हैं जो अभी जेएनयू, दिल्ली में बिदेसिया लोक नाट्य शैली पर पीएच.डी. कर रहें हैं। इस मौके पर नाट्यकला एवं फ़िल्म विभाग के प्राध्यापक डॉ. सतीश पावड़े तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थी उपस्थित थे।

प्रो. सुरेश शर्मा ने कार्यशाला के दोनों संचालकों का स्वागत करते हुए भिखारी ठाकुर के जीवन और उत्तर-भारत में भिखारी ठाकुर की लोकप्रियता पर प्रकाश डाला। जैनेन्द्र कुमार दोस्त ने विभाग और विश्वविद्यालय को इस कदम के लिए शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि लोक-

नाट्यों के माध्यम से हम कई सारे पारंपरिक और आधुनिक बहस-विमर्शों को समझ सकते हैं। अकादमिक जगत में खास कर के परफॉर्मेंस के अध्ययन में इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है। प्रभुनाथ ठाकुर ने कहा कि पारंपरिक लोक-कलाकारों को अकादमिक जगत में सीखने-सिखाने के लिए मौका देना बहुत ही सराहनीय कदम है, इससे होनहार और कलाप्रेमी छात्रों की पहचान की जा सकती है।

कार्यशाला के संयोजक डॉ. सतीश पावड़े ने कहा कि भिखारी ठाकुर जैसे महान लोक कलाकार, चिंतक के परिवार के किसी सदस्य का हमारे विश्वविद्यालय में आना और हमें अपने लोक कला शैली के बारे में बताना एक ऐतिहासिक क्षण है। उन्होंने कहा कि इसके पहले भारतीय सिनेमा के जनक दादासाहब फाल्के के परिवार के सदस्यों को भी बुलाया गया था। कार्यशाला से प्रशिक्षित छात्रों ने भिखारी ठाकुर के नाटक *गबरघिचोर* की प्रस्तुति 29 दिसंबर को विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस समारोह में की। उदघाटन सत्र का संचालन विभाग के एम.फिल. के छात्र रोहित कुमार ने किया तथा एवं धन्यवाद ज्ञापन श्वेता क्षीरसागर ने किया।

नाट्यकला व फ़िल्म अध्ययन विभागात लोकनाट्य कार्यशाळा
नाटयकलावंतांना लोक-समाजाकडून शिकण्याची गरज -प्रो. सुरेश शर्मा

वर्धा दि. 7: नाट्यकलावंतांनी लोक-समाजाकडून समजण्याची आणि शिकण्याची गरज आहे. भारतातील नाट्यपरंपरेचे मूळ लोक नाटकांध्ये असून अशा कला जिवंत ठेवण्यासाठी कलाकारांनी या कलेचा मागोवा घेत राहिले पाहिजे असे प्रतिपादन नाट्यकला व फिल्म अध्ययन विभागाचे प्रमुख प्रो. सुरेश शर्मा यांनी केले. ते महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विद्यापीठात विभागाच्या वतीने बिदेसिया लोक नाट्य कार्यशाळेच्या उदघाटनप्रसंगी बोलत होते. ही कार्यशाळा 22 ते 29 डिसेंबर दरम्यान आयोजित करण्यात आली होती.

कार्यशाळेचे संचालन "भिखारी ठाकुर रंगमंडलचे कलाकार प्रभुनाथ ठाकुर आणि विभागाचे माजी विद्यार्थी जैनेन्द्र कुमार दोस्त यांनी केले.

कार्यशाळेचे संयोजक डॉ. सतीश पावड़े म्हणाले की महान लोक कलाकार भिखारी ठाकुर यांच्या कुटुंबातील सदस्याने लोक कला शैलीविषयी मार्गदर्शन करणे ही ऐतिहासिक घटना होय. याआधी भारतीय चित्रपटसृष्टीचे जनक दादासाहेब फाळके यांच्या कुटुंबातील सदस्यांनाही विभागात बोलविण्यात आले होते असेही ते म्हणाले.

कार्यशाळेत प्रशिक्षण घेतलेल्या विद्यार्थ्यांनी भिखारी ठाकुर यांचे *गबरघिचोर* हे नाटक विद्यापीठाच्या 17व्या स्थापना दिनाच्या सांस्कृतिक कार्यक्रमात 29 डिसेंबर रोजी सादर केले. उदघाटन सत्राचे संचालन एम.फिल. चा विद्यार्थी रोहित कुमार याने केले तर आभार श्वेता क्षीरसागर हिने मानले.